श्री राम चन्द्र मिशन®

जनवरी २०१० भाग ३, अंक १

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

For Private Circulation Only

हम अपने पाठकों को प्रगतिशील नव वर्ष की शुभ कामनायें देते हैं। एकोज़ समाचार पत्र अब एक नये रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो रहा है। पूरे विश्व भर में एकोज़ अब इसी रूप में प्रस्तुत होगा।

इस अंक की विषय–सामग्री:

गुरुदेव का दौरा..... पेज १–४
घोषणायें..... पेज ५
ज़ोन की गतिविधियां..... पेज ६–१०
प्रकाश के केन्द्र..... पेज ११

गुरुदेव का दौरा

दक्षिण भारत में तिरुची से लगभग ४५ किमी दूर तुरैयुर नाम का एक छोटा सा शहर है जहाँ मिशन का विकास बहुत ही तीव्र गति से हुआ है। यहाँ २००१ में सिर्फ २ अभ्यासी थे जिनकी संख्या बढ़कर अब लगभग १५० हो गई है। इस केन्द्र के विकास को मद्देनज़र रखते हुए एक आश्रम की आवश्यकता को महसूस किया गया तथा एक एकड़ की जमीन खरीदी गई।

२५ अक्टूबर को गुरुदेव ने पहली बार इस केन्द्र का दौरा किया। सभी अभ्यासियों ने आनन्द का वातावरण महसूस किया। उन्होंने लगभग ८५० अभ्यासियों को सत्संग कराया तथा उसके बाद तमिल में एक वार्ता दी। अपनी वार्ता में उन्होंने जाति, पंथ और अनावश्यक अनुष्ठानों को त्यागने की आवश्यकता पर बल देते हुए आन्तरिक बदलाव लाने का आह्वान किया और आये हुए आन्तरिक बदलाव को अपने बाहरी कार्यों के साथ मेल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार ही हम दूसरों को मिशन की तरफ आकर्षित कर सकते हैं।

भविष्य में आश्रम के सम्भावित विस्तार पर गुरुदेव ने विचार–विमर्श किया जबकि अभी आश्रम का निर्माण–कार्य शुरु भी नही हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान में भी भविष्य की नींव रखते हुए, गुरुदेव की दृष्टि सुदूर भविष्य तक जाती है जबकि हमारी सोच सिर्फ वर्तमान तक ही सीमित है।

सिलीगुड़ी और गैंगटोक

२ नवम्बर को गुरुदेव ने कोलकाता से बगडोगरा के लिये उड़ान ली जहाँ अभ्यासियों के एक विशाल समुह ने गर्मजोशी के साथ उनका स्वागत किया। उन्होंने हाल ही में ली गई मिशन की नई जमीन का दौरा किया जो हवाई अड्डे से १ घंटे की दूरी पर है। बाद में उन्होंने सिलीगुड़ी में एक होटल के कान्फ्रेन्स रूम में ५.३० बजे सत्संग कराया।

दूसरे दिन की सुबह का सत्संग सुबह ७ बजे होना तय हुआ था लेकिन गुरुदेव सुबह ६.३० बजे से पहले ही ध्यान–कक्ष में पहुँच गये और अभ्यासियों के पहुँचने की प्रतीक्षा की। सुबह ९ बजे वह तीष्ठा नदी के समानान्तर अति रमणीय दृश्यों के मार्ग द्वारा सिलीगुड़ी से गैंगटोक के लिये रवाना हुए। वे दोपहर के आसपास सिक्किम सीमा पर पहुँचे। वह रंगपो में राज्य के अतिथि गृह में रुके जहाँ परम्परागत तरीके से उनका स्वागत किया गया। आधे घंटे की ड्राइव के बाद वें प्राकृतिक सुन्दरता से घिरे हुए रिसोर्ट पहुँचे। उन्होंने परम्परागत वास्तुशिल्प की तारीफ की। स्थानीय अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने बड़े से आगँन में बैठकर खिली हुई धूप का आनन्द लिया। गुरुदेव, सिक्किम में काफी प्रसन्न नज़र आ रहे थे और इस बात का ज़िक्र उन्होंने कई बार किया।

बातचीत के दौरान किसी ने कहा कि लोग सहज मार्ग में प्रवेश करते हैं लेकिन ज्यादातर लोग शुरु करने के तुरन्त बाद ही छोड़ देते हैं। इस पर गुरुदेव ने जबाब दिया कि "लोग आयेंगे और जायेंगे, लेकिन एक बार वे यहाँ आ जाते हैं उसके बाद यह देखना मेरी ज़िम्मेदारी है कि वे कहाँ जाते हैं।"

शाम का सत्संग शुरू कराने से पहले उन्होंने सभी उपस्थित लोगों से पूछा कि "क्या आप सब तैयार है?" इस प्रश्न ने उनके सिक्किम में ठहरने का संकेत दे दिया था। रात में खाने के बाद उन्होंने बाबूजी के साथ अपने वार्तालाप के कुछ किस्से सुनाये।

चौथे दिन की शुरुआत सुबह ७ बजे के सत्संग से हुई। उस शाम को एक छोटे से रंगारंग कार्यक्रम के बाद उन्होंने अभ्यासियों के साथ बांनफायर पर समय बिताते हुए सबके साथ रात का भोजन किया और कुछ पौराणिक कथायें भी सुनाई।

सिलीगुड़ी

रंगपो

गैंगटोक

उन्होंने सिक्किम अभ्यासियों को दावत के आयोजन पर धन्यवाद देते हुए भगवान राम और केवट (नाविक) की कहानी सुनाई और कहा, "मैं प्रार्थना करता हूँ कि जैसे आपने हमारे शरीर के लिए भोजन मुहैया कराया है, ईश्वर आप सबको, आत्मा का भोजन मुहैया कराये।"

५ नवम्बर को गुरुदेव ने स्थानीय बाजार में जाकर क्रेस्ट के पुस्तकालय के लिये कुछ किताबें खरीदी। उन्होंने स्थानीय प्रशिक्षक के घर पर सत्संग कराने के बाद अभ्यासियों के साथ समय बिताया। यह एक बहुत ही खूबसूरत दिन था, सब लोग बहुत ही खुश थे और उनकी दिव्य कृपा में ओतप्रोत हो रहे थे।

शाम के सत्संग के बाद गुरुदेव ने एक वार्ता दी और इस बात पर जोर दिया कि सब मनुष्य एक जैसे होते हैं और मनुष्यों के बीच में किसी प्रकार की कोई बाधा नही होनी चाहिये। आध्यात्मिकता में कोई भेदभाव नही है, यहाँ केवल असलियत है और यही असलियत सभी प्राणियों का सार है।

६ नवम्बर को उन्होंने सिक्किम से सिलीगुड़ी के लिये प्रस्थान किया। सिलीगुड़ी पहुँचने पर उन्होंने आश्रम की जमीन पर धधकते सूरज के तले सत्संग करवाया और सभी उपस्थित लोगों को प्रसाद बाँटा। दोपहर के खाने के बाद वे कोलकाता के लिये रवाना हुए।

उडीसा

१५ नवम्बर को गुरुदेव ने खड़गपुर से ३५० किमी दूर भुवनेश्वर की सड़क-मार्ग द्वारा यात्रा की। ११ बजे के करीब उनका काफिला उडीसा के एक छोटे केन्द्र भद्रक पहुँचा। भुवनेश्वर के लिये प्रस्थान करने से पहले वे अभ्यासियों से मिले और दोपहर का भोजन किया।

करीब ४.४५ पर वे भुवनेश्वर के एक होटल में पहुँचे। भारी बारिश के बावजूद अभ्यासियों ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। यह उनकी भुवनेश्वर की पहली तथा उड़ीसा की दूसरी यात्रा थी। करीब २२ साल पहले उन्होंने कटक और अन्गुल की यात्रा की थी जो उडीसा की उनकी पहली यात्रा थी।

१६ नवम्बर को गुरुदेव ने आश्रम स्थल के लिये प्रस्थान किया जो उडीसा का पहला आश्रम है। लगभग ३५० अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। सत्संग के बाद दी गई अपनी वार्ता में उन्होंने कहा कि "शंका, आत्मा का ज़हर है। कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में शंका रखने की इजाज़त नहीं है जैसे कि ईश्वर का अस्तित्व। और बाबूजी ने अभ्यासियों के लिये या भावी अभ्यासियों के लिये यह कहकर काफी प्रावधान बना दिये हैं कि पद्धति को जाँचे, अपने भावी गुरु को परखें और जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जायें कि आपको सही गुरु मिल गया है, तो आप अपने आपको स्टील के तार से उनके साथ बाँध लें ताकि आप फिर से उनसे अलग होने की मूर्खता न करें।"

१८ नवम्बर को गुरुदेव ८.३५ पर ध्यान-कक्ष में पहुँच गये। उन्होंने बाबूजी के विस्पर्स भाग १ और २ के सन्देशों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि ये सन्देश 'श्रुति' की श्रेणी में आते हैं क्योंकि ये किसी के भी दिमाग की उपज नही है, किसी ने उन्हें नही लिखा है, किसी ने उन्हें टाइप नही किया है। वे [सन्देश] आये हैं, उन्हें प्राप्त किया गया है और उन्हें लिखा गया है। इसीलिये ये [सन्देश] बेहद ध्यान देने योग्य हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह याद रखना चाहिये कि असली स्वतन्त्रता आत्मा की स्वतन्त्रता है जो हमेशा से रही है, और जो वर्तमान और भविष्य में भी रहनी चाहियें। इस स्वतन्त्रता को प्राप्त करना है क्योंकि दुर्भाग्य से, किसी तरह से आत्मा रक्त और मांस के इस शरीर में कैद हो गई है।

उसके बाद उन्होंने सत्संग करवाया और अभ्यासियों के द्वारा पूछे गये प्रश्नों के जबाव देते हुए उनके साथ कुछ समय बिताया। अगले दिन हवाई-मार्ग द्वारा उन्होंने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

बैंगलोर

२८ नवम्बर को नाश्ते के बाद सुबह ८.३० बजे गुरुदेव ने चेन्नई से प्रस्थान किया और करीब ११.४५ बजे नेट्रमपल्ली आश्रम पहुँचे। वहाँ ८०० अभ्यासियों को सत्संग कराने के बाद करीब १.३० बजे वे वहाँ से रवाना हुए तथा ४.३० बजे परमधाम आश्रम, बैंगलोर पहुँचे।

रविवार की सुबह सत्संग करवाने से पहले उन्होंने घोषणा की कि विस्पर्स फ्रोम द ब्राइटर वर्ल्ड के तीसरे भाग की बुकिंग अब शुरू हो गई है। उन्होंने इस बात का भी ज़िक्र किया कि सब मिलाकर इसके १२ भाग होंगे और हर साल इसका १ भाग प्रकाशित किया जायेगा।

३ दिसम्बर, ब्रहस्पतिवार को गुरुदेव क्रेस्ट गये वहाँ चल रहे साधना कार्यक्रम के लगभग ४० प्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया। शाम को सभी उपस्थित अभ्यासियों को प्रसन्न करते हुए उन्होंने गोल्फ कार्ट में परिसर का दौरा किया।

सिलीगुड़ी

भुवनेश्वर

बैंगलोर

तिप्तूर

४ तारीख को गुरुदेव ने साधना कार्यक्रम के समापन सत्र में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और हर प्रतिभागी को प्रमाण–पत्र प्रदान किये। कुछ प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम का हिस्सा होने और गुरुदेव के सान्निध्य का अवसर मिलने पर अपनी खुशी ज़ाहिर की जिसे उन्होंने बहुत ही शान्तिपूर्वक सुना। अपनी वार्ता में उन्होंने कहा, "अतः – सिद्धान्त एवम् प्रयोग, सिद्धान्त एवम् प्रयोग, इस प्रकार इन दोनों को एक साथ आजमाना, क्रमशः प्रगति करने के समान है जैसे कि आप किसी सीढ़ी पर चढ़ते हैं। और मुझे खुशी है कि क्रेस्ट में हमारे पास निर्देशों, शिक्षा, एवम् प्रशिक्षण– उन लोगों के लिये लागू करने की सुविधा है जो इसे स्वीकार करने के इच्छुक हैं। लेकिन सिर्फ स्वीकार करना ही काफी नही है। क्या वे यहाँ पर दी गई शिक्षा का पालन करने के लिये तैयार हैं ?"

5 दिसंबर, शनिवार को क्रेस्ट में गुरुदेव ने कर्नाटक के प्रशिक्षक सेमिनार का उद्घाटन किया और प्रशिक्षकों को प्रेरित करते हुए उन्हें दिल से काम करने का एक सुदृढ़ संदेश दिया। इस कार्यक्रम में 145 प्रशिक्षकों ने भाग लिया जिनमें से कुछ विदेशी प्रशिक्षक भी शामिल थे।

तिप्तूर

6 दिसंबर को सुबह 8 बजे गुरुदेव, क्रेस्ट से तिप्तूर के लिये रवाना हुए। तिप्तूर, बैंगलौर के उत्तर पश्चिम में 160 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। वहाँ करीब 90 अभ्यासी हैं। इस केन्द्र पर गुरुदेव की यह तीसरी यात्रा है परन्तु ध्यानकक्ष एवं अन्य निर्माण के बाद वे पहली बार यहाँ आयें हैं। आगमन के पश्चात गुरुदेव ने शाम के 5 बजे और रात के 9 बजे सत्संग करवाने की घोषणा की। दोनो सत्संग उन्होंने स्वयं ही करवाये। बंगलोर तथा आसपास के केन्द्रों से लगभग 1000 अभ्यासी उनका सान्निध्य पाने के लिये आये हुए थे।

अगले दिन गुरुदेव ने सुबह ध्यान करवाया और कुछ देर आराम करने के बाद तुमकूर के लिये निकल गये। तुमकूर के अभ्यासी बड़ी बेसब्री से गुरुदेव का इंतज़ार कर रहे थे। अपने प्रवास के दौरान गुरुदेव बेहद उत्साहित थे और उन्होंने बाबुजी के बारे में तथा महाभारत की कुछ घटनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा "जब हम अंधकार में होते हैं तब हमे केवल अंधकार ही दिखता है। तो उससे बाहर कैसे निकलें? बस बाहर निकल आइये।"

दोपहर के भोजन के बाद गुरुदेव ने तुमकूर से प्रस्थान किया और 4.30 बजे बंगलोर पहुँचे। कॉफी पीने के बाद वे सीधे परमधाम की ओर गये और ध्यान करवाया। बेहद व्यस्त दिन बिताने के बावजूद भी गुरुदेव ने देर रात तक अपना काम जारी रखा। उन्होंने बैंगलौर में अपने प्रवास को एक दिन आगे बढ़ा कर आराम करने का फैसला किया।

तिरुपुर

9 तारीख की सुबह 6.15 बजे गुरुदेव, बैंगलोर से निकले और 7.30 बजे कृष्णगिरी पहुँचे। नाश्ते के बाद गुरुदेव ने 9.00 बजे सत्संग कराया। वे दोपहर के भोजन के लिये ईरोड रुके और कुछ देर आराम करने के बाद डायमंड जुबली पार्क, तिरुपुर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर कॉफी पीने के बाद गुरुदेव ने टिप्पणी की कि बाबुजी कह रहे हैं, "अब, जब तुमने कॉफी पी ली है, तो तुम काम शुरु कर सकते हो"। वे तुरन्त ध्यान–कक्ष गये और 6.15 बजे शाम का सत्संग कराया। गुरुदेव ने घोषणा की कि आने वाले तीन दिनों में हर रोज तीन सत्संग होंगे, एक सुबह 6.30 बजे, सुबह 11 बजे और एक शाम को 5.30 बजे।

तुमकूर

तिरुपुर

केरल और तमिलनाडु से आये अभ्यासी तथा गुजरात से आये हुए प्रशिक्षकों समेत वहाँ लगभग 4000 अभ्यासी एकत्रित थे। सभी सुविधाओं के साथ वहाँ भंडारे जैसा माहौल था। तथा गुरुदेव ने खुद ही तीनों सत्संग करवाये।

मलमपुड़ा

कोयम्बतूर

11 तारीख को गुरुदेव ने सुबह 6.30 बजे और 11 बजे का सत्संग कराया। दोपहर को वे शहर में एक अभ्यासी के घर गये और ठीक शाम के सत्संग के समय वापस आकर दिन का आखिरी सत्संग शाम के 5.30 बजे करवाया।

१२ तारीख को गुरुदेव ने तीनों सत्संग ध्यान-कक्ष में करवाये। १३ तारीख को सुबह ६.३० बजे का सत्संग करवाने के बाद वे कोयम्बतूर आश्रम के लिये रवाना हुये जहाँ वे करीब ११ बजे पहुँचे। गुरुदेव ने वहाँ कुछ देर विश्राम किया तथा उसके बाद अभ्यासियों के साथ कुछ समय व्यतीत करने के बाद मलमपुड़ा के लिये प्रस्थान किया।

१४ तारीख को मलमपुड़ा में गुरुदेव ने कुछ शान्तिपूर्वक पल बिताये। दोपहर के भोजन के बाद वे कोयम्बतूर में एक अभ्यासी के घर गये जहाँ वे करीब ३ बजे पहुँचे। रात के खाने से पहले और खाने के बाद उन्होंने अभ्यासियों के साथ कुछ समय बिताया। सभी उपस्थित अभ्यासियों ने उनके सान्निध्य में एक अच्छे सत्र का आनन्द उठाया।

१५ तारीख को रात के भोजन से पूर्व गुरुदेव ने अपने कमरे में विभिन्न विषयों पर अनौपचारिक रूप से चर्चा की। जिसमें हिन्दू दर्शन शास्त्र के स्तम्भ-वेद, ब्रह्म-सूत्र और गीता, आयुर्वेद, युग, समय की धारणा आदि विषय शामिल थे। वैज्ञानिक कथायें जो उनका पसंदीदा विषय है, के बारें में संक्षेप में बताते हुए आइन्सटाइन के प्रयोगों तथा आइजैक आसिमोव द्वारा लिखित 'फाउंडेशन' की श्रृंखला के बारे में बताया। इस सत्र के प्रमुख अंश इस प्रकार थे:

गुरुदेव ने समझाया कि विचारों में स्वयं की कोई शक्ति नही होती परन्तु वे शक्ति के श्रोत को सक्रिय कर सकते हैं। उन्होंने प्रार्थना से आह्वान की गई शक्ति और खुद की ऊर्जा के इस्तेमाल के बीच का अन्तर समझाया।

चूकिं प्रकाश को पहुँचने में समय लगता है। उदाहरण के लिये, सूर्य की रोशनी को प्रथ्वी पर पहुँचने में ८ मिनट लगते हैं। इसलिये हम अपनी आँखों से जो कुछ भी देखते हैं वह बीता हुआ होता है और कभी भी 'वर्तमान' नही होता।

यह एक बहुत ही अच्छा सत्र था जिसने कमरे में उपस्थित सभी लोगों को चेतना के अलग स्तर पर पहुँचा दिया। १६ तारीख को गुरुदेव ने ४.३० बजे चेन्नई के लिये प्रस्थान किया।

चेन्नई

चेन्नई वापस आने के बाद गुरुदेव कई प्रशासनिक कार्यों में बेहद व्यस्त रहे। मणपाक्कम आश्रम में दुनिया भर से करीब २०० अभ्यासी, क्रिसमस की छुट्टियां मनाने आये हुए थे।

२४ दिसम्बर की शाम को उन्होंने क्रिसमस केक काटा। अभ्यासियों ने [कैरल] क्रिसमस के गीत गाये। किसी ने इस पर टिप्पणी की कि "गुरुदेव के साथ रहना स्वयं ईसामसीह के साथ रहने के समान है।" इस टिप्पणी को सुनकर वे प्यार से मुस्कुराये। आश्रम में त्योहार जैसा माहौल छाया हुआ था।

३१ दिसम्बर को गुरुदेव ने २ सप्ताह से दुनिया भर के कई देशों से भारत में आये हुए स्कॉलर्स के समूह के साथ कुछ समय बिताया। खड़गपुर में २ हफ्ते बिताने के बाद ये दूसरे चरण के प्रशिक्षण के लिये चेन्नई आये हैं।

१ जनवरी को नव वर्ष के आगमन की उद्घोषणा करते हुए गुरुदेव ने सुबह का सत्संग करवाया। सत्संग के बाद भाई कमलेश पटेल ने गुरुदेव की हाल ही में दी गई वार्ताओं की डीवीडी सेट का विमोचन किया।

गुरुदेव ने अपने नये साल के सन्देश में कहा, "तो, प्रिय बहनों और भाइयों: हमें दिल की आवाज पर ज्यादा ध्यान देना चाहियें, अपनी आन्तरिक आवाज की पुकार पर। यदि जरूरत पड़े तो बाहरी दुनिया के लिये अपने कान बन्द कर लो। अपनी आँखें बन्द कर लो, सुनो मत। ईश्वर द्वारा दी गई पाँचों इन्द्रियों के द्वारा हमें अपना ध्यान बाहर से अन्दर की तरफ मोड़ना है। इस बदलाव के बिना आध्यात्मिकता, सिर्फ बात करने का एक विषय मात्र रह जाता है जिसके बारे में हम चर्चा करते हैं, जिसके लिये हम प्रशिक्षण लेते हैं पर उस पर हम कोई ध्यान नहीं देते। इसीलिये हम जहाँ हैं, वहीं पर बने रहते हैं।"

४ और ८ जनवरी को गुरुदेव ने कई -युगलों को विवाह के बन्धन में बाँधा। १५ जनवरी को वे दिल्ली से होते हुए सतखोल के लिये रवाना होंगे।

क्रिसमस

स्कॉलर्स के समूह के साथ

चेन्नई में नव वर्ष

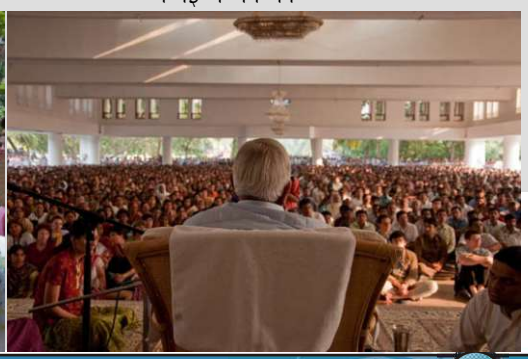

सदस्यता के नये दर

वार्षिक सदस्यता

- कृपया सभी वार्षिक सदस्यता के लिये राशि इस नाम से निम्नलिखित पते पर भेजें: स्प्रिचुअल हायरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट, प्रशासन कार्यालय, बाबुजी मेमोरियल आश्रम, श्री राम चन्द्र मिशन, मणपाक्कम, चेन्नई, ६००११६।
- वार्षिक सदस्यता, अप्रैल अंक के साथ शुरु होकर आर्थिक वर्ष के अनुसार अगली जनवरी को समाप्त होगी।

त्रिमासिक पत्रिकायें

कॉनस्टेन्ट रिमेम्बरेन्स	३०० रुपये मात्र
हिन्दी/तमिल/तेलगु/कन्नड़/गुजराती/मलयालम/बंगला	१०० रुपये मात्र

आजीवन सदस्यता

आजीवन सदस्यता के लिये कृपया सदस्यता फ़ार्म, एस.एच.पी.टी. डोनेशन फ़ार्म और डोनेशन की राशि को इस पते पर भेजें: मेनेजिंग ट्रस्टी, स्प्रिचुअल हायरार्की पब्लिकेशन ट्रस्ट, 'डिवाईन ब्लिस', नार्थ ब्लाक, ७ए, २/३, ज़जेस कोर्ट रोड़, कोलकाता, ७०००२७ (पश्चिम बंगाल), भारत।

पुस्तक/ऑडियो– वीडियो कार्पस की आजीवन सदस्यता

अंग्रेजी	६००० रुपये मात्र
हिन्दी	४५०० रुपये मात्र
मराठी/तमिल/तेलगु/कन्नड़/गुजराती/मलयालम	३००० रुपये मात्र
ऑडियो–वीडियो	२५००० रुपये मात्र

त्रिमासिक पत्रिकाओं की आजीवन सदस्यता

कॉनस्टेन्ट रिमेम्बरेन्स	३००० रुपये मात्र
हिन्दी सहज मार्ग	२००० रुपये मात्र
तमिल/तेलगु/कन्नड़/गुजराती/मलयालम	१५०० रुपये मात्र

नये प्रकाशन

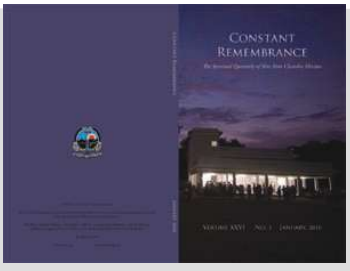

कॉनस्टेन्ट रिमेम्बरेन्स
जनवरी २०१०

सत्योद्यम
(तमिल पुर्नप्रकाशन)

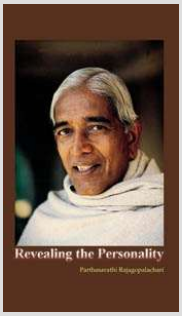

रिवीलिंग द पर्सनालिटी

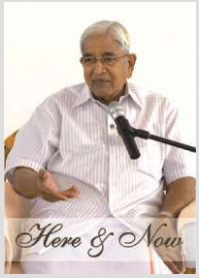

हियर एंड नाऊ
डी वी डी का सेट

विगत वर्षों की एक झलक

इस नये खंड में मिशन के साहित्य और पत्रिकाओं में प्रकाशित घटनाओं की झलकियां और उससे सम्बन्धित गुरुदेवों की वाणियों को आपके सामने प्रस्तुत किया जायेगा। इस अंक की शुरुआत लालाजी से करते हुए हम सन् १९५० के पहले अर्थात ६० वर्ष पूर्व के समय पर नज़र डालेंगे।

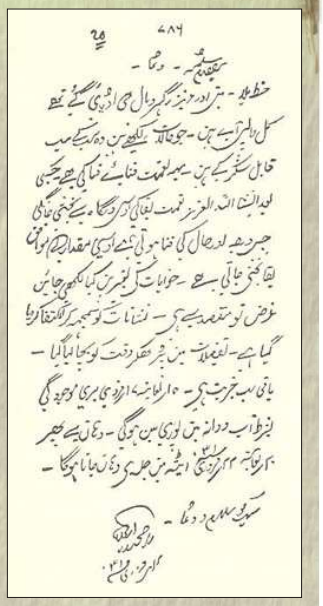

लालाजी ने अपने सहयोगियों से मिलने के लिये विभिन्न जगहों पर भ्रमण किया। कई साधक उनसे मिलने उनके घर पर जाया करते थे और वहाँ ठहरा करते थे। अभ्यासियों को लिखे ख़तों में बृन्दावन, एटा, कानपुर, मनिपुरी और औरई का ज़िक्र है। उनके पत्रों/लेखों से उद्धरित कुछ अनमोल रत्न यहाँ प्रस्तुत हैं:

दिसम्बर १९२९:

लालाजी का खत बाबूजी के नाम : "संतापित किया जाना अच्छा है। घर, विनम्रता एवं सहिष्णुता की पाठशाला है। एक सोच के अनुसार इस तरह की बातों में धैर्य रखना तपस्या समझा जाता है। और यह अन्य प्रकार की तपस्याओं से श्रेष्ठतर है। इसलिये क्रोध एवं दु:ख के बजाय मनुष्य को गैरत का आश्रय लेना चाहिये। (गैरत एक भाव है कि मनुष्य स्वयं कसूरवार है, हांलाँकि वास्तव में वह कसूरवार नहीं है।)"

अप्रैल १९३०

लालाजी महाराज द्वारा एक और पत्र: "अधिकतर लोग पूजा केवल यंत्रवत् करते रहते हैं। उनमें सच्ची चाह, व्यथा अथ्वा बैचेनी नहीं होती अन्यथा वे अवश्य ही अवस्थाओं का अनुभव करते और उनमें हर दिन एक नये जीवन का संचार होता।"

स्रोत: रामचन्द्र की आत्मकथा भाग १ (१८९९–१९३२)/रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियाँ तृतीय भाग

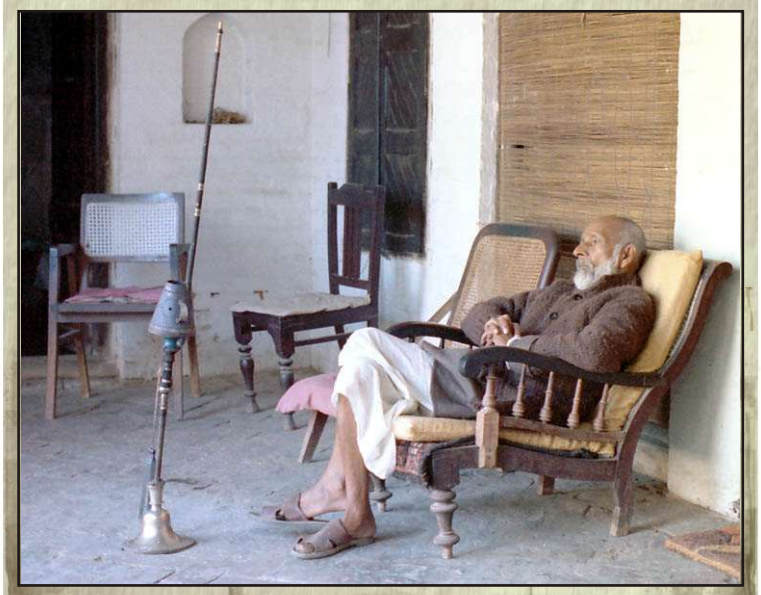

लखनऊ आश्रम– ध्यानकक्ष

लखनऊ में आई.आई.एम रोड़ पर स्थित बाबुजी मेमोरियल आश्रम में ध्यान–कक्ष का निर्माण शुरू हो गया है। प्रस्तावित कक्ष का माप ३०m x ४८m है और इसमें लगभग ३००० अभ्यासियों के बैठने की क्षमता है। कक्ष का निर्माण स्टील फ्रेम के ढ़ाँचे पर होगा।

११ नवम्बर २००९ को श्री राम चन्द्र मिशन के सचिव भाई उमाशंकर ने इसकी नींव रखी और मार्च, २०१० तक इस निर्माण के पूरे होने की आशा है।

वाराणसी

२ नवंबर, २००९ को भाई उमा शंकर ने लय योग आश्रम, सारनाथ, वाराणसी में ध्यानकक्ष के निर्माण–कार्य का शुभारम्भ किया। इस आश्रम की नींव पूज्य मालिक द्वारा १६ फरवरी २००६ में रखी गयी थी।

ध्यान–कक्ष का आकार अष्टभुज है और यह लगभग ८००० वर्ग फुट में बना हुआ है। स्तम्भों की नींव खोदने का कार्य एक दिन में ही खत्म कर दिया गया था। आठों स्तम्भों के आधार रखने का काम समाप्त हो चुका है।

चिरक्कारा, कोल्लम, केरल

हाल ही में गुरुदेव की तिरुपुर यात्रा के दौरान उन्होंने चिरक्कारा, कोल्लम के आश्रम का नाम 'तपोवन' रखा था। यह आश्रम २ फ़रवरी, २००८ से क्रियाशील है। कोल्लम और तिरुवनंदपुरम्, पठानमथीता और अलापुड़ा जिलों के आसपास के अभ्यासी इस आश्रम में एकत्रित होते हैं। 'तपोवन' आश्रम, कोल्लम से २५ किमी दूर, दक्षिण की ओर तथा तिरूवनंदपुरम् से ७५ किमी दूर, उत्तर दिशा में एन.एच. ४७ पर स्थित है।

खूबसूरत वनों के मध्य स्थित यह आश्रम, चावल के खेतों के साथ–साथ नारियल तथा कई अन्य वृक्षों से घिरा हुआ है। आश्रम के सामने निरन्तर बहने वाला स्वच्छ पानी का एक झरना बहता है। यहाँ लगभग १५० अभ्यासी क्षेत्रीय–सभा के लिये एकत्रित होते हैं। महीने के पहले रविवार को पूर्ण–दिवसीय कार्यक्रम आयोजित होता है तथा बाल–केन्द्र द्वारा वी.बी.एस.ई के कार्यक्रम का भी आयोजन होता है। गुरुदेव द्वारा रचित इस पावन वातावरण का लाभ उठाने के लिये सभी अभ्यासियों का 'तपोवन' में हार्दिक स्वागत है।

ज़ोनल आश्रम, गोरखपुर

२ दिसंबर, २००९ को भाई उमाशंकर ने आश्रम की नींव डाली। गोरखपुर और आसपास के केंद्रों से लगभग १५० अभ्यासी इस अवसर पर एकत्रित हुये। आने वाले बसन्त उत्सव तक ध्यान–कक्ष के पूरे हो जाने की उम्मीद है। यह आश्रम सगौन के हरे–भरे और खूबसूरत वन, कुश्महरी के सामने स्थित है।

इस अवसर पर भाई उमाशंकर ने कहा कि आश्रम, प्रकाश के केन्द्र हैं जहाँ हर अभ्यासी गुरुदेव की मौज़ूदगी को महसूस करता है। उन्होंने गुरुदेव की अति प्रचलित सुक्ति "सेवा करो, सेवा पाओ" का हवाला देते हुए सभी अभ्यासियों को इस उद्देश्य के लिये स्वेच्छा से आगे आने का अनुरोध किया।

लखनऊ

वाराणसी

चिरक्कारा

युवा कार्यक्रम, हुबली (उत्तर कर्नाटक)

युवाओं के लिये हुबली में २५–१०–०९ को एक ऑडियो–वीडियो का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। हमारे लगभग १५ अभ्यासी, अपने करीब २५ दोस्तों को साथ लेकर आये।

इस कार्यक्रम का आयोजन युवाओं को निम्नलिखित विषयों पर अधिक जानकारी देने हेतु किया गया था: नेतृत्व, सुनने की कला, व्यक्तित्व का विकास, चरित्र का निर्माण, संबंध, आदर्श व्यक्तित्व, संवाद/व्यवहार, महत्वाकांक्षा बनाम अभिलाषा और ध्यान से मन का नियमन।

आवश्यकतानुसार गुरुदेव की वार्ताओं के अंश दिखाये गये। इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं में अपने माता–पिता, समाज तथा सर्वोपरि अपने स्वयं के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना पैदा करने की चेष्टा की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु तैयार करने का भी प्रयास किया गया।

प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण

हाल ही में आयोजित ज्यादातर प्रशिक्षकों के लिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गुरुदेव मौज़ूद रहे हैं और उन्होंने अपनी उपस्थिति, अपनी वार्ताओं और सत्संग से इन कार्यक्रमों को जीवन्त व धन्य किया है।

इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों के लिए यह एक प्रेरणा–दायक और शक्ति–दायक अनुभव था।

गुजरात

गुजरात से सत्तर प्रशिक्षक तिरुपुर आये और १० से १४ दिसम्बर तक तिरुपुर, कोयम्बतूर और मलमपुड़ा रिट्रीट सेंटर में गुरुदेव के सान्निध्य में समय बिताया। गुरुदेव ने वहाँ एकत्रित सभी अभ्यासियों को हर रोज ३ सिटिंग दी और एक अच्छे अभ्यासी के इन कथित पक्षों पर प्रकाश ड़ाला:

- ध्यान अंदर की ओर मोड़ना।
- दूसरे व्यक्ति की बात को भलीभाँति समझने के लिए उसे धैर्ययपूर्वक सुनना।
- दूसरों से सीखने की मनोवृत्ति, नाकि उन्हें नीचा दिखाने का प्रयास करना।
- हमारे द्वारा किये गये हर कार्य में धैर्य विकसित करना।

कर्नाटक

५ दिसम्बर को क्रेस्ट, बंगलोर में १४० प्रशिक्षकों को संबोधित करते हुए गुरुदेव ने कर्नाटक में सहज मार्ग के अभ्यास के बीच के अन्तराल और

भक्ति की कमी पर टिप्पणी की और प्रशिक्षकों को मिशन की धमनियों की तरह काम करने और नये केन्द्रों पर जाने की आवश्यकता पर बल दिया।

आन्ध्र प्रदेश

बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में २५ से २७ दिसम्बर तक आन्ध्र प्रदेश के प्रशिक्षकों के लिए दो दिन की प्रशिक्षक–बैठक का आयोजन किया गया। राज्य की राजनैतिक उथल–पुथल के कारण हुई परिवहन समस्याओं के बावजूद भी १८० प्रशिक्षकों ने इसमें भाग लिया।

इसमें प्रशिक्षक का कार्य, चरित्र, विस्पर्स, सहज मार्ग – जीवन का तरीका आदि विषयों पर वार्तायें दी गयी जिसके बाद आपसी वार्तालाप और मनन के लिये अन्तराल दिया गया। रविवार सवेरे ११ बजे जब गुरुदेव ने उनके साथ एक घंटे से ज्यादा का समय बिताया तो सभी प्रशिक्षकों की खुशी का ठिकाना न रहा। इस समय के दौरान उन्होंने एक वार्ता दी तथा सत्संग करवाया।

महाराष्ट्र

पुणे केन्द्र में महाराष्ट्र के ५० प्रशिक्षकों ने १३ से १५ नवम्बर तक दो दिवसीय प्रशिक्षक बैठक में भाग लिया।

पहले एक अभ्यासी, नियमित साधना का महत्त्व, अभ्यासियों को सिटिंग देना, मिशन की गतिविधियां और प्रकाशन आदि विषयों पर चर्चा हुई। नये प्रशिक्षकों ने इस कार्यक्रम से प्रेरणा ली और पूरी निष्ठा के साथ काम करने के दृढ़ विश्वास के साथ घर वापस लौटे।

मुम्बई में जन–सभा का आयोजन, महाराष्ट्र

होमी भाभा सेन्टर फोर साइन्स एजुकेशन में ८ नवम्बर, रविवार २००९ को अनुशक्तिनगर, मुम्बई के निवासियों के लिये एक जन–सभा का आयोजन किया गया जिसमें लगभग १२० लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरम्भ श्री राम चन्द्र मिशन तथा सहज मार्ग पद्धति के अन्तर्गत ध्यान का अभ्यास विषय पर बहन धारेश्वर द्वारा दी गई सन्क्षिप्त वार्ता से हुआ। शाम की सभा का विषय था– आत्म–खोज का विज्ञान 'एक स्वाभाविक मार्ग'।

भाई ए. पी, दुरई, एस आर सी एम के सन्युक्त सचिव ने हमारे जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों में सन्तुलन लाने के लिये ध्यान की आवश्यकता को सविस्तार समझाया।

भाई भाटिया ने अपने अनुभवों को सबके साथ बाटँते हुए बताया कि किस प्रकार वे सहज मार्ग में आये और आने के बाद उन्होंने अपने जीवन में क्या बदलाव पाये। इसके बाद एक सन्क्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र चला। कुछ दर्शक जानना चाहते थे कि क्या सहज मार्ग, ज्यादातर होने वाली अंतर–व्यक्तिगत समस्याओं, स्वास्थ्य– सम्बंधी परेशानियों आदि को हल कर सकता है।

अंत मे गुरुदेव की वार्ता 'इन्सटेन्ट लिब्रेशन' (तत्काल मुक्ति) का वीडियो चलाया गया। इसका दर्शकों पर स्पष्ट प्रभाव देखा गया। २२ प्रतिभागियों ने प्राथमिक सिटिंग के साथ ध्यान का अभ्यास शुरु किया।

जयपुर

भोपाल

इन्दौर

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम (ATP)

जयपुर केन्द्र ने २२ नवंबर २००९ को नये अभ्यासियों के लिए आधे दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें साधना के विभिन्न पहलुओं पर वार्तायें और प्रश्नोत्तर के सत्र थे। कार्यक्रम में भाग लेने वाले करीब ३० नये अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम को बहुत उपयोगी पाया और उनके अनुसार एक नवागन्तुक को मिशन और उसकी गतिविधियों के बारे में जानने के लिए ऐसे कार्यक्रम में हिस्सा लेना चाहिए।

२७ से २९ नवम्बर, २००९ को भोपाल आश्रम में एक आवासीय अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। करीब ५० अभ्यासियों ने आश्रम के शांत वातावरण में इस कार्यक्रम में भाग लिया। शिक्षकगणों ने प्रस्तुतियों तथा प्रश्नोत्तर सत्र केमाध्यम से प्रतिभागियों की साधना से सम्बन्धित विभिन्न शंकाओं का निवारण किया। सभी प्रतिभागियों ने वहाँ भाईचारे व सामन्जस्य का वातावरण पाया और वे सब अपनी साधना को नियमित रूप से करने के दृढ़ निश्चय के साथ वापस लौटे।

रांची केन्द्र ने २९ नवंबर २००९ को पिछले एक वर्ष के दौरान मिशन में शामिल हुए सभी अभ्यासियों के लिए पहली बार अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। सत्र के सूत्रधार भाई तिवारी थे। भाई लाल, भाई तनेजा, भाई साहू, भाई मिश्रा और बहन तिवारी ने स्मृति द्वारा निर्मित ऑडियो–वीडियो तथा अन्य उपकरणों की सहायता से प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न हिस्सों को प्रस्तुत किया। गुरुदेव की ऑडियो–वीडियो की वार्ताओं को सभी प्रतिभागियों ने काफी सराहा क्योंकि इससे उन्हें मिशन और साधना के विभिन्न पहलूओं को समझने में काफी मद्द मिली।

मध्य प्रदेश के इन्दौर केन्द्र में ६ दिसंबर २००९ को अनुभवों के आदान–प्रदान का एक सत्र आयोजित किया गया। जिन अभ्यासियों ने गुरुदेव के साथ हाल ही में यात्रा की और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया, उन्होंने अपने अनुभवों को प्रतिभागियों के साथ बाँटा। भाई आप्टे ने क्रेस्ट, बैंगलोर में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया था, उन्होंने कार्यक्रम का विस्तृत ब्योरा देते हुए सभी प्रतिभागियों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। भाई मुन्द्रा को गुरुदेव के साथ गैंगटोक यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन्होंने यात्रा के दौरान लिये गये सुन्दर फोटो का सब के साथ आदान–प्रदान किया। उन्होंने गुरुदेव के उत्साह और इन स्थानों पर उनके जाने की व्यग्रता का वर्णन किया। उन्होंने गुरुदेव के साथ बिताये उन सभी यादगार क्षणों को सबके साथ बाँटा जो मज़ाकिया पर सारगर्भित थे। भाई रावेरकर को गुरुदेव के साथ क्रेस्ट, खड़गपुर में कुछ समय बिताने का सुअवसर मिला, उन्होंने गुरुदेव द्वारा दी गई वार्ताओं के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इन सभी अनुभवों को सुनकर अभ्यासियों के हृदय आन्तरिक आनन्द से भरे प्रतीत हुए।

१५ नवंबर को गुजरात के भुज केन्द्र में आधे दिन के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें करीब २१ अभ्यासियों ने हिस्सा लिया। भाग लेने वालों में कुछ ऐसे लोग थे जो मिशन छोड़ कर चले गये थे। इस कार्यक्रम में साधना से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर वार्तायें शामिल थी। अभ्यासियों ने सत्संग के महत्व को दर्शाते हुए नारद पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की। इस कार्यक्रम से प्रतिभागियों को अपनी शंकाओं के निवारण में मदद मिली और वे काफी उत्साहित होकर वापस गये।

वडोदरा केन्द्र ने १४ से १५ नवंबर को डेढ़ दिन की एक युवा कार्यशाला आयोजित की। लगभग ३५ अभ्यासियों ने इस गोष्ठी में भाग लिया। इस गोष्ठी को पाँच सत्रों में विभाजित किया गया था जिससे युवा, सहज मार्ग साधना और मिशन में उनकी भूमिका के बारे में भलीभाँति समझ सकें और सभी के बीच भाईचारे की भावना और मजबूत हो सके। प्रतिभागियों ने इस गोष्ठी को काफी लाभकारी और पूर्ण रूप से शिक्षाप्रद पाया।

१५ नवंबर २००९ को दावनगेरे केन्द्र ने चित्रदुर्ग, करूर, हरिहरा और भद्रावती से आये ७० अभ्यासियों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम में भाई रमणी आर, भाई नागेश, बहन इन्दिरा प्रसाद और बहन सुजाता उपस्थित थी। पहले सत्र में अभ्यासियों को चर्चा के विषय के आधार पर चार दलों में बाँटा गया। प्रत्येक दल से एक सहयोगी सदस्य ने चर्चा किये गये विचार–बिंदुओं को प्रस्तुत किया। कुछ अभ्यासियों के चर्चा किये गये विषयों पर प्रश्न थे जिसका शिक्षकों ने उत्तर दिया और उसके हर पहलू को स्पष्ट किया।

दूसरे सत्र में भाई श्रीनिवास ने समझाया कि आध्यात्मिक पथ पर सद्गुरु की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है और कैसे हमें गुरुदेव के साथ सहयोग करना चाहिये।

बच्चों ने एक नाटक प्रस्तुत किया जिसमें अभ्यासियों के व्यवहार और बर्ताव को दर्शाया गया था। यह कार्यक्रम प्रत्येक अभ्यासी के लिए शिक्षाप्रद था और चारों तरफ खुशी का माहौल व्याप्त था।

रांची

भुज

दावनगेरे

वी.बी.एस.ई कार्यक्रम

होशंगाबाद

होशंगाबाद केन्द्र के सेवा स्कूल में वी.बी.एस.ई पाठ्यक्रम के अनुसार मूल्यों की शिक्षा देने के लिए एक पीरियड होता है और यह क्रम पिछले दो वर्षों से जारी है। इस वर्ष, वार्षिक समारोह की योजना बनाते समय स्कूल प्रबंधन ने मूल्यों पर बल देने का निर्णय लिया और हमारे वी.बी.एस.ई समन्वयक को सहायता के लिए बुलाया। स्वयंसेवक दल ने 'खुशी' के लिये जाने का निश्चय किया। टीम ने छात्रों के साथ मिलकर कार्य करते हुए एक लघु नाटिका, गीत और नृत्य तैयार किए, जिसमें मूल्यों के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया था। इस सत्र में अभिभावक भी उपस्थित थे, और इस तरह यह संदेश अनेक लोगों तक पहुँच सका।

मूल्य आधारित शिक्षा के कारण अधिकाधिक अभिभावक इस स्कूल की तरफ आकर्षित हो रहे हैं और इस प्रकार यह स्कूल विनम्र भाव से पूज्य मालिक की सेवा में जुटा हुआ है।

अर्सलिन कॉन्वेंट, रांची

नवम्बर २००९ को ९०० से अधिक छात्रों ने एक घंटे के सत्र को ध्यान पूर्वक सुना जिसमें समय का महत्व, समय–प्रबंधन तथा मानव जीवन का उद्देश्य जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया था।

बच्चों को कार्य करने और उसे भूल जाने की सलाह दी गई ताकि उनके मन पर छाप न बने। हमारी अच्छी–बुरी आदतें कैसे बनती हैं, और उसके बाद हम आदतों के कैसे गुलाम हो जाते हैं, इसे दर्शाने के लिए अनुभवों व चित्रों का सहारा लिया गया।

भाई अरुण कुमार ने ४ डी (4D) का इस्तेमाल करते हुए समय प्रबंधन और बेहतर ढ़ंग से कार्य करने का तरीका बताया। उन्होंने छात्रों को सलाह दी कि कार्यों को अलग–अलग बास्केट में वर्गीकृत करना प्रारंभ करें। पहली बास्केट उन कार्यों के लिए जिन्हें सौंपा (Delegate) जा सकता है, दूसरी उन कार्यों के लिए जिन्हें टाला (Delay) जा सकता है, तीसरी उन कार्यों के लिए जिन्हें छोड़ा (Delete) जा सकता है और चौथी उन कार्यों की जिन्हें किया जाना (To be Done) आवश्यक है इसलिए अविलम्ब पूरा किया जाये।

स्कूल प्रशासन तथा छात्रों ने इस कार्यक्रम को बहुत पसन्द किया, जैसा कि समापन सत्र में उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था।

फरक्का, पश्चिम बंगाल

वी.बी.एस.ई कार्यक्रम का आयोजन भाई विजय कुमार और भाई सुब्रामन्य कुमार, प्रधानाचार्य, डी.पी.एस, फरक्का द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम को दो दिन में विभाजित किया गया। ११ दिसम्बर को पहला सत्र कक्षा ६–८ के लगभग ३०० छात्रों के लिए तथा दूसरा सत्र कक्षा ९–११ के लगभग २०० छात्रों के लिए हुआ। अध्यापक सम्मेलन का आयोजन १२ दिसम्बर को हुआ जिसमें ५७ अध्यापकों और फरक्का के स्कूलों से आये ३ प्रधानाचार्यों ने भाग लिया।

बच्चों को अनेक अनुभवों तथा कहानियों के माध्यम से मूल्यों की जानकारी दी गई। दोनों समूहों के छात्रों और अध्यापकों ने अनुभवों को भलीभांति समझा। अंत में छात्रों से कहा गया कि वे स्वयं की अध्यापक के रुप में कल्पना करें और अध्यापकों की छात्रों से तथा छात्रों की अध्यापकों से रखी जाने वाली अपेक्षाओं का उल्लेख करें।

छात्रों द्वारा दिये गये फीडबैक को अगले दिन अध्यापकों के लिए आयोजित कार्यक्रम में प्रभावी ढ़ंग से पेश किया गया। अध्यापकों से इस विषय पर विचार करने का आग्रह किया गया कि क्या वे छात्रों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने के लिए वास्तव में प्रयत्नरत हैं या सिर्फ अपनी तनख्वाह से मतलब रखते हैं, हम केवल कुछ अध्यापकों को ही क्यों याद करते हैं, उन सभी को क्यों नहीं जिन्होंने हमें पढ़ाया था और हम छात्रों के अनुकरण के लिए मिसाल क्यों नहीं स्थापित करते?

सभी अध्यापक कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए तथा फीडबैक में इस कार्यक्रम की पुनरावृत्ति तथा ध्यान पर एक सत्र शामिल करने आदि को लेकर अनुरोध प्राप्त हुए।

हुबली

हुबली केन्द्र में १० नवम्बर को प्रात: १०:०० से सायं ५:०० बजे तक एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। बंगलोर की बहन सरोजा और बहन माधुरी ने लगभग ४१ अध्यापकों तथा १५ अभ्यासियों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया।

बहन माधुरी ने मूल्यों के अर्थ का खुलासा किया जबकि भाई अजीत कामथ ने मूल्यों की आवश्यकता को स्पष्ट किया। बहन सरोजा ने आयु के साथ बदलते विचारों पर प्रकाश डाला और बताया कि ४ से ७ वर्ष के बीच की आयु वाले बच्चे कैसे अध्यापकों का अनुकरण करने में समर्थ होते हैं और उसके बाद निर्णायक मानसिकता पैदा हो जाती है। जिस प्रकार कक्षा में प्रवेश करते समय अध्यापक त्रिआयामी व्यक्तित्व (शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक) होता है, उसी प्रकार बच्चा भी प्रवेश करता है। लेकिन बच्चा, वयस्क की तुलना में अधिक शीघ्रता से अध्यापक के मिजाज को भाँप सकता है।

कुछ गेम्स खेले गए जिनका मकसद हृदय द्वार खोलना, सहयोग का आदान–प्रदान करना आदि था। सामूहिक परिचर्चा हुई जहाँ अध्यापकों को क्लिप, दर्पण, पेन जैसी साधारण चीजें दी गई और उनसे मूल्यों का निर्धारण करने का आग्रह किया गया। अध्यापकों से इतिहास या भूगोल शास्त्र जैसे विषयों को भी मूल्यों से जोड़ने का आह्वान किया गया। इसे भी वार्तालाप सत्र का रुप दिया गया जिसमें अध्यापकों ने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया।

अनुभवों का आदान–प्रदान, बंगलौर

२० दिसम्बर २००९ को परमधाम आश्रम में सत्संग के बाद एक विस्तारित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभ्यासियों ने गुरुदेव की हाल की बंगलोर यात्रा से जुड़े अनुभवों और शिक्षा का आदान प्रदान किया। इस सत्र से कुछेक विचार उभरकर सामने आये जो इस प्रकार हैं:

- गुरुदेव का कार्य दिल से दिल की ओर केन्द्रित होता है। वे जानते हैं कि प्रत्येक दिल में क्या गुजर रही है तथा उसकी पीड़ा और वेदना की तत्काल अनुभूति करते हैं। हमें तो केवल दिल को खोलकर उनके सामने रखना है।
- गुरुदेव कहते है कि परिपूर्ण चरित्र "अंदर और बाहर से एक समान होता है।" हम गुरुदेव को देखकर सीखते हैं कि इस पर अमल कैसे करें।
- गुरुदेव की प्रत्येक यात्रा अभ्यासियों के लिए धैर्य तथा उम्मीद के साथ प्रतीक्षा करना सिखाती है। इसलिए गुरुदेव की यात्रा से हमें विभिन्न स्तरों पर प्रतीक्षा करने की सीख मिलती है।
- किसी भी केन्द्र पर गुरुदेव का आगमन हमारे आध्यात्मिक अभ्यास को और गहन बनाने का अवसर होता है। अत: उनकी यात्रा से बहुत पहले हमें स्वयं को तैयार करके इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए।

कई अनुभवों को शब्दों में नहीं ढ़ाला जा सकता। इन्हें अपने दिलों की गहराइयों में संजोया जाता है और इसे गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता और प्रेम में रुपांतरित किया जाना चाहिए।

वर्षगांठ समारोह, कोलकाता आश्रम

कोलकाता आश्रम के शुभारंभ की छठी वर्षगांठ मनाने के लिए २५ दिसम्बर को बच्चों और अभ्यासियों के लिए एक खेल स्पर्धा आयोजित की गई थी। बहन जैन और बहन कोठारी द्वारा आयोजित खेलों में भाग लेने के लिए सभी आयु वर्गों के १०० से अधिक प्रतिभागी उपस्थित हुए।

३ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए एक आलिंगन दौड़ रखी गई थी जिसमें प्रतिभागियों ने दौड़ लगाई और अपने अभिभावकों को आलिंगन बद्ध किया। बड़े प्रतिभागियों ने एक प्याले में रखी दाल और राजमा को अलग अलग करने का खेल खेला। इस स्पर्धा की खास बात यह थी कि बच्चे, अभ्यासियों को आश्रम लाने का प्रेरणा श्रोत बनें।

आंतरिक खोज तथा चिंतन, इंदौर

आठ अभ्यासियों ने १८ से २२ दिसम्बर तक पांच दिनों तक आश्रम के शांत वातावरण में प्रवास किया। इस सत्र का उद्देश्य दिल की गहराइयों में उतरना और सही अर्थों में प्रिय गुरुदेव की ओर अग्रसर होना था।

आश्रम में न कोई भाषण और न ही कोई वार्ता होती थी क्योंकि प्रतिभागियों से अपनी साधना करने, अंतरावलोकन करने, ड़ायरी लिखने, किताबें पढ़ने और ध्यान करने का आग्रह किया गया था।

भाई एन.वी. देशपांडे द्वारा प्रेरणात्मक उद्बोधन के दो शब्द कहे गये। प्रतिदिन सुबह और शाम के समय एक प्रशिक्षक आश्रम में आया करते थे ताकि वे लोग व्यक्तिगत सीटिंग ले सकें।

अभ्यासियों ने ताजगी और आंतरिक शांति को महसूस किया और अपने उद्देश्य के प्रति दृढ संकल्प लेकर पुन: सांसारिक जीवन में प्रवेश किया। इस कार्य का संयोजन भाई अविनाश कर्मारकर और भाई राजेश रावेरकर ने किया। ज़ोनल स्तर पर भी ऐसे ही एक सत्र को आयोजित करने की योजना बनाई जा रही है।

महाराष्ट्र युवा अधिवेशन, पुणे

पुणे में १८ से २० दिसम्बर, २००९ तक आयोजित युवा अधिवेशन में ४७ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

औपचारिक परिचर्चाओं के अलावा, व्यक्तिगत साधना पर भी बल दिया गया। भाई वैद्य ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए शिक्षक सदस्यों का परिचय कराया। प्रतिभागियों को आठ समूहों में विभाजित किया गया था प्रत्येक समुह को राजयोग के एक सोपान पर बोलने के बाद अपना परिचय देना था। दिन भर जिन विषयों पर चर्चा हुई उनमें आत्म विकास– सहज मार्ग के अनुसार; दैनिक साधना, प्रेम, करुणा और दया, आस्था तथा अभ्यास के जरिए आंतरिक शक्ति, अभिलाषा तथा महत्वाकांक्षा, चरित्र और परिवर्तन तथा चिंता से कैसे मुक्ति पायें आदि शामिल थे।

अगले दिन के विषय थे: संतुलित जीवन : एक कला, समाज के प्रति हमारा दायित्व, गुरुदेव के साथ संबंध विकसित करना तथा प्रभावी संवाद। कुछ प्रतिभागियों के लिए यह कार्यक्रम एक नई शुरुआत के साथ समाप्त हुआ।

इलाहाबाद आश्रम

इलाहाबाद केन्द्र का औपचारिक रुप से शुभारंभ १९६५ में हुआ और श्री एम. एल. चतुर्वेदी को केन्द्र का प्रशिक्षक प्रभारी बनाया गया । सन् १९९४ तक वहीं पर रविवार का सत्संग होता था और सभी कार्य उनके निवास स्थान से ही किये जाते थे।

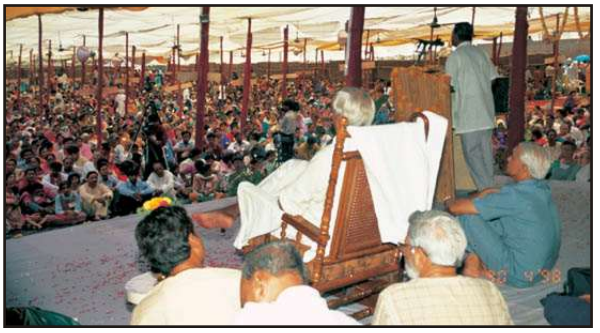

अभ्यासियों ने स्थानीय स्तर पर धनराशि जुटाकर मुंडेरा, इलाहाबाद में १३ एकड़ जमीन खरीदी। इसमें से ४ एकड़ जमीन मिशन को दान दी गई। १३ अप्रैल १९९४ को अभिलेख का पंजीकरण हुआ तथा रविवार १३ नवम्बर, १९९४ को गुरुदेव की कृपा से इस भूमि पर पहला सामूहिक सत्संग हुआ।

श्री आर.आर.के. त्रिवेदी के प्रयास स्वरूप उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मोती लाल वोहरा ने ध्यान–कक्ष के निर्माण के लिए २७ फरवरी, १९९६ को १० लाख रुपये का प्रथम वित्तीय अनुदान मंजूर किया। ९ मार्च १९९६ को गुरुदेव की उपस्थिति में माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा आधारशिला रखी गई। अपनी वार्ता में गुरुदेव ने उल्लेख किया कि हिमालय में रहकर तपस्या करने वाले ऋषी किस प्रकार दिव्य प्रेरणा के जरिए निर्देशों को लोगों के दिलों तक सम्प्रेषित करते थे। गुरुदेव ने कहा कि श्री वोहरा भी दिव्य योजना का एक हिस्सा हैं। उन्होंने आह्वान किया कि महत्वपूर्ण पदों पर आसीन लोगों को अपनी शक्ति को सिर्फ जन कल्याण के लिए ही नहीं बल्कि लोगों के आध्यात्मिक उत्थान के लिए भी इसका प्रयोग करना चाहिए। तदोपरांत ध्यान–कक्ष के निर्माण के लिए तीन अतिरिक्त अनुदान भी मंजूर किए गए।

ध्यान–कक्ष का उद्घाटन गुरुदेव द्वारा १४ नवम्बर १९९७ को किया गया। भू–तल पर इसका परिमाप १०,००० वर्ग फुट है और २००० वर्ग फुट की दो बालकनियां हैं। गुरुदेव ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस केन्द्र पर एक आश्रम बनेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। निर्माण की गति पर लोगों ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि लोगों ने दिल से कार्य किया, तभी यह संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि मिशन में युवा हमारी सेना हैं, हमारी ताकत हैं और उनमें एक प्रकार का जोश होता है जिसका बड़ी उम्र के लोगों में अभाव होता है।

भाई उमा शंकर बाजपेयी के सतत प्रयासों से उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मास्टर्स कॉटेज, अध्ययन कक्ष, रसोईघर, भोजनालय, आवास–गृह, शौचालय ब्लॉक तथा सड़कों के निर्माण के लिए आगे और वित्तीय अनुदान की स्वीकृति मिली। इस प्रकार इलाहाबाद में आश्रम के विकास के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से कुल ८० लाख रुपये के वित्तीय अनुदान प्राप्त हुए। देश में यह मिशन का पहला आश्रम है जिसके लिए इतना महत्वपूर्ण वित्तीय अनुदान सरकार से मिला। मास्टर्स कॉटेज के पास एक सुव्यवस्थित बगीचा है जिसमें भांति–भांति के फलदार वृक्ष और फूलों वाले पौधे हैं।

आश्रम में सभी सुविधाओं से परिपूर्ण एक स्वास्थ्य केन्द्र चलता है जहाँ निकटवर्ती इलाकों के अनेक गरीब तथा जरुरतमंद लोगों की सेवा की जाती है।

रविवार को लगभग ४०० अभ्यासी, सत्संग में भाग लेते हैं तथा प्रतिदिन सुबह और शाम को सत्संग होता है। आश्रम में नियमित रूप से विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.